संसदीय अध्ययन तथा प्रशिक्षण ब्यूरो द्वारा राजस्थान विधान सभा और सिक्किम विधान सभा के लिए प्रत्यायित मीडिया कर्मियों हेतु संसदीय पद्धति और प्रक्रिया के बारे में आयोजित परिचय कार्यक्रम के अंतर्गत 12 अगस्त, 2015 को माननीय लोक सभा अध्यक्ष का विदाई भाषण

संसदीय अध्ययन तथा प्रशिक्षण ब्यूरो द्वारा राजस्थान और सिक्किम विधान सभा के लिए प्रत्यायित मीडियाकर्मियों हेतु आयोजित संसदीय पद्धति और प्रक्रिया संबंधी परिचय कार्यक्रम के विदाई सत्र में आज आप सबके बीच आकर मुझे बहुत ख़ुशी हो रही है।

मित्रो, हम सब संसदीय लोकतंत्र को मजबूत बनाने में संसद और मीडिया के बीच प्रभावी भागीदारी स्थापित करने के महत्व से सुपरिचित हैं। लोक हितों की रक्षा करने वाले मीडिया और संसद-दोनों ही लोकतंत्र की सफलता और इसके सुचारू कार्यकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए संसदीय अध्ययन तथा प्रशिक्षण ब्यूरो ने विधायी निकायों के लिए प्रत्यायित मीडिया कर्मियों के लाभार्थ संसदीय पद्धति और प्रक्रिया के बारे में इस परिचय कार्यक्रम का विशेष रूप से आयोजन किया है ।

संसदीय लोकतंत्र में मीडिया संसद और लोगों के बीच संवाद की प्रमुख कड़ी का कार्य करता है। यह दोनों ओर सूचना के आदान-प्रदान

का प्रभावी माध्यम है। मीडिया ही लोगों को संसदीय कानूनों और चर्चाओं का सार और संसद में हुए कार्य के बारे में बताता है। दूसरी ओर संसदीय प्रश्नों, प्रस्तावों और वाद-विवाद के लिए अपेक्षित मूलभूत जानकारी मीडिया से मिलती है। सदस्य अक्सर मीडिया में छपी ख़बरों पर निर्भर करते हैं। मीडिया एक सशक्त प्रहरी होता है, शिक्षक होता है और लोकतंत्र की चेतना जगाने में और विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हम सब जानते हैं कि मीडिया अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से तभी निभा सकता है, जब इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त हो। तथापि इस स्वतंत्रता के साथ कुछ जिम्मेदारियां भी जुडी हुई हैं।

जहाँ संसद शासन और विकास के मुद्दों पर चर्चा करती है और लोगों के कल्याण के लिए कानून बनाती है, वहीं मीडिया लोगों की इच्छाओं, आकांक्षाओं और सरोकारों को मुखरित करने का दायित्व निभाता है। उत्तरोत्तर सूचना आधारित विश्व में मीडिया ही हमारी संसद और राज्य विधानमंडलों के कार्यकरण की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करता है। जहाँ तक सभा की कार्यवाही को कवर करने की बात है, मीडिया कर्मियों को सभा के नियमों और प्रक्रियाओं की स्पष्ट और पूरी जानकारी तथा समझ होनी चाहिए तभी वे लोगों को सभा की कार्यवाही के बारे में सही जानकारी दे पाएंगे।

हमारी संसद का सदैव यह प्रयास रहा है कि संसद की कार्यवाही को कवर करने के लिए मीडिया को पर्याप्त सुविधाएँ दी जाएँ ताकि संसद को लोगों के नज़दीक लाया जाए जिनका यह प्रतिनिधित्व करती है। संसदीय लोकतंत्र में यह बहुत जरूरी है कि संसद की कार्यवाही को सही ढंग से लोगों तक पहुँचाया जाए और अच्छे भाषणों एवं सकारात्मक कार्यों को उचित स्थान मिले। ऐसी रिपोर्टिंग से उनका उत्साहवर्द्धन होगा जिन्होंने कार्यवाही में बहुत मेहनत करके हिस्सा लिया है एवं अपने मुद्दे को सार्थकता के साथ सभा में प्रस्तुत किया है।

आप सब जानते होंगे कि वर्ष 1991 में संसद के प्रश्नकाल का प्रसारण करने की छोटी सी शुरुआत की गई थी। अब संसद की पूरी कार्यवाही का सीधा प्रसारण किया जा रहा है ताकि लोग देश की सर्वोच्च लोकतांत्रिक संस्था में अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों के काम-काज को प्रत्यक्ष रूप से देख सकें।

मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगी कि संसद और मीडिया के बीच अच्छे और सहयोगपूर्ण संबंध स्थापित किये जाने की आवश्यकता है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि आज के 'ज्ञान आधारित समाज' में मीडिया आम आदमी, संसद और कार्यपालिका के बीच संपर्क का प्रभावी माध्यम है। इसीलिए संसद और मीडिया को लोकतंत्र को सुदृढ़ करने में एक दूसरे के पूरक और सहयोगी के रूप में कार्य करना चाहिए। कभी-कभी

संसदीय कार्यवाही के दौरान स्थगन, अव्यवस्था और शोर-शराबा भी होता है। विधान सभा की कार्यवाही को कवर करने वाले प्रत्यायित मीडिया कर्मी होने के नाते आप सब भला- भांति जानते हैं कि अधिकांश दिनों में सदस्य दूरगामी महत्व के ठोस कार्य भी करते हैं। इसलिए मीडिया कर्मियों को हमारे विधायी निकायों द्वारा किये जाने वाले अच्छे कामों को भी पूरी कवरेज देनी चाहिए।

10 से 12 अगस्त, 2015 तक पिछले तीन दिनों के दौरान आप सबको अनुभवी संसद सदस्यों, मीडिया विशेषज्ञों और लोक सभा सचिवालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ चर्चा का मौका मिला। इस परिचय कार्यक्रम के लिए चुने गए 'सकारात्मक मीडिया : संसदीय लोकतंत्र के सुदढीकरण में इसकी भूमिका', 'चौथे स्तम्भ के रूप में मीडिया की भूमिका' और 'संसदीय विशेषाधिकार' जैसे विषयों का उद्देश्य विशेष रूप से आपकी संसद की कार्य प्रणाली की गहन जानकारी प्रदान करना है ।

मुझे इस बात की ख़ुशी है कि केंद्रीय सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री, कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौर ने अपने उद्घाटन भाषण में मीडिया की भूमिका के बारे में अनेक पहलुओं के बारे में बात की। श्री विनय सहस्त्रबुद्धे द्वारा **'सकारात्मक मीडियाः संसदीय लोकतंत्र के सुदृढ़ीकरण में इसकी भूमिका'** विषय पर व्यक्त विचारों से आपको निर्वाचित

प्रतिनिधियों और लोगों के बीच सेतु के रूप में मीडिया की भूमिका के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी मिली होगी। केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री, श्री थावर चंद गेहलोत ने लोक महत्व के मामले उठाने के लिए संसद सदस्यों को उपलब्ध प्रक्रियात्मक उपायों के महत्व के बारे में आपके साथ चर्चा की थी। मुझे विश्वास है कि आप संसद संग्रहालय, संसद ग्रंथालय और लोक सभा टेलीविज़न के स्टूडियो की यात्रा से लाभान्वित हुए होंगे ।

मुझे विश्वास है कि इन संवाद सत्रों से आप सब अवश्य ही लाभान्वित हुए होंगे और अब आप हमारे संसदीय लोकतंत्र के काम-काज को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे।

धन्यवाद ।